बाल विकास—अर्थ एवं परिभाषा

(Child Development–Meaning & Definition)

बाल एवं विकास इन दो शब्दों के संयोग से बाल-विकास शब्द की रचना हुई है। 'बाल' शब्द से अभिप्राय यहाँ केवल बालक अथवा बाल्यकाल विशेष से नहीं अपितु गर्भावस्था के प्राणी से लेकर परिपक्वता प्राप्त कर रहे अथवा परिपक्वता प्राप्त कर चुके व्यक्ति से भी है। बाल शब्द विभिन्न अवस्थाओं का पर्याय है जिनमें व्यक्ति परिपक्वता के लक्ष्य की ओर अग्रसित होता है। बाल-विकास के अध्ययन के दौरान हम बालक शब्द अजन्मे शिशु के लिए भी प्रयोग करते हैं और 21 वर्षीय किशोर के लिए भी।

'विकास' शब्द हमारे लिए नया नहीं है। जीवन के हर क्षेत्र में हम इसका प्रयोग करते हैं तथा सामान्य रूप से इसका अर्थ है 'वर्तमान स्थिति से सुधार की ओर बढ़ना'। मनुष्य के साथ जुड़ जाने पर इस शब्द के अर्थ और विस्तृत हो जाते हैं। हम देखते हैं कि जन्म से पूर्व (गर्भावस्था) की अवस्था से लेकर मृत्युपर्यन्त व्यक्ति में निरन्तर अनवरत परिवर्तन होते रहते हैं। इन परिवर्तनों की गति में परिवर्तन होता रहता है किन्तु गति पूर्णतः रूकती नहीं है। गर्भावस्था में तेजी से बालक के शारीरिक आकार एवं भार में परिवर्तन होता है। नग्न आँखों से न देख पाने योग्य प्रजनन कोशिकाएँ अण्डाणु एवं शुक्राणु गुणात्मक रूप से बढ़ते जाते हैं और नौ माह दस दिन में एक सम्पूर्ण शरीर का सृजन कर देते हैं। जन्म के बाद किशोरावस्था तक अनेकों महत्वपूर्ण शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन बालक के व्यक्तित्व को स्वरूप प्रदान करने की दिशा में नित्य प्रति दृष्टिगत होते हैं, किन्तु सभी परिवर्तन व्यवस्थित एवं समानुगत होते हैं। प्रत्येक नया परिवर्तन पिछले परिवर्तन पर निर्भर करता है।

विकास प्रक्रिया के अन्तर्गत आने वाले परिवर्तन निश्चित लक्ष्य की ओर अग्रसित होते हैं तथा इनका परम लक्ष्य होता है परिपक्वता। ये परिवर्तन वातावरण के प्रभाव द्वारा निर्देशित होते हैं। परिवर्तनों की प्रक्रिया के कारण ही विकास का निरीक्षण, मापन एवं मूल्याँकन भी किया जा सकता है। समग्र रूप में "विकास गर्भावस्था से मृत्युपर्यन्त के लक्ष्य की ओर निरन्तर अग्रसित परिवर्तनों की वह श्रृंखला है जो व्यवस्थित एवं समानुगत है।"

बाल विकास का अध्ययन 'विकासात्मक मनोविज्ञान' की एक अलग शाखा के अन्तर्गत किया जाता है जो बालक के व्यवहारों (Behaviour) का अध्ययन गर्भावस्था से मृत्यु तक करती है। परन्तु वर्तमान में इसे 'बाल विकास' में परिवर्तित कर दिया गया है। इसका प्रमुख कारण यह है कि बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत केवल बालकों के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है जबकि बाल विकास में उन सभी तथ्यों का अध्ययन किया जाता है जो बालकों के व्यवहारों को एक निश्चित दिशा प्रदान कर विकास में सहायता करते हैं।

हरलॉक के अनुसार, "बाल मनोविज्ञान का नाम बाल विकास इसलिए बदला गया क्योंकि अब बालक के विकास के समस्त पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है, किसी एक पक्ष पर नहीं।"

(The name child psychology was changed to child development to emphasize that the focus was now on the pattern of child development rather than certain aspects of development).

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों व शिक्षाविदों ने बाल विकास को अपने-अपने तरीके से परिभाषित किया है। कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) मूसेन एवं साथियों के अनुसार, "आज भी बाल विकास के अनेक अध्ययनों का सम्बन्ध आयु प्रवृत्ति से सम्बन्धित है, जिसमें आयु सम्बन्धी चिन्तन, समस्या समाधान, सृजनशीलता, तर्क, नैतिकता, व्यवहार आदि का अध्ययन किया जाता है। बाल विकास में यह ज्ञात करने के प्रयास किये जाते हैं कि विकास से सम्बन्धित परिवर्तन किस प्रकार एवं किन कारणों से हो रहे हैं।"

(Child development is concerned with age trends, particularly in areas like thinking & problem solving, creativity, reasoning, behaviour and attitudes child development is concerned on the process underlying there changes - why & how these change occurs.)

—Mussen & etal.

(2) हरलॉक के अनुसार, "आज बाल विकास में मुख्यतः बालक के रूप व्यवहार, रूचियों एवं लक्ष्यों में होने वाले उन विशिष्ट परिवर्तनों की खोज पर बल दिया जाता है जो उसमें एक विकासात्मक अवस्था से

Scanned with CamScanner

दूसरी विकासात्मक अवस्था में पदार्पण करते समय होते हैं। साथ ही बाल विकास में यह खोज करने का भी प्रयास किया जाता है कि यह परिवर्तन कब होते हैं ? इसके क्या कारण है एवं यह वैयक्तिक हैं या सार्वभौमिक।"

(Today, the major emphasis in child development is on discovering the characteristics changes in appearance, behaviour, interests & goals as the child passes from one developmental period to another. In addition, child development attempts to find out when these changes occur normally, what is responsible for them & whether they are individual or universal.)

—**E. B. Hurlock.**

अत: स्पष्ट है कि बाल विकास बाल मनोविज्ञान की ही एक शाखा है, जिसमें बालकों के विकास, विकास को प्रभावित करने वाले तत्व तथा बालक के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

बाल विकास के अन्तर्गत हम व्यक्ति के विकास क्रम में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करते हैं। ये परिवर्तन वंशानुगत गुणों एवं वातावरण के प्रभाव के फलस्वरूप उत्पन्न होते हैं। व्यक्ति समाज का एक अभिन्न अंग होता है अत: अन्य व्यक्तियों के विकास एवं वृद्धि से भी प्रभावित होता है। इस प्रकार बाल विकास न केवल एक विशिष्ट बालक के वृद्धि एवं विकास का अध्ययन करता है, वरन् वातावरण में उपस्थित अन्य व्यक्तियों, वस्तुओं, भावनाओं, अभिवृत्तियों, दशाओं आदि के फलस्वरूप होने वाले प्रभाव को भी विशेष महत्व देता है। यह स्पष्ट है कि किसी भी बालक, उसकी वृद्धि एवं विकास का अध्ययन उस समय तक पूर्ण नहीं माना जा सकता है जब तक उसका वातावरण के विभिन्न पहलुओं की दृष्टि में रखते हुए अध्ययन न किया जाये।

बाल विकास का क्षेत्र

(Scope of Child Development)

वस्तुत: बाल विकास का क्षेत्र अथवा विषय क्षेत्र बालक ही है। बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाएँ, प्रकार, सामान्यताएँ, असामान्यताएँ आदि का अध्ययन हम प्रमुख रूप में इस विषय के अन्तर्गत करते हैं। बालक का सम्पूर्ण जीवन तथा जीवन के सभी आयाम बाल विकास का विषय क्षेत्र है। बाल विकास के विषय विस्तार में हम प्रमुख रूप से निम्नलिखित बातों का अध्ययन करते हैं—

1. वृद्धि एवं परिपक्वता की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन (Study of various stages of growth and development)
2. विकास के विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन (Study of various areas of development)
3. विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का अध्ययन (Study of various factors effecting development)
4. विभिन्न असामान्यताओं का अध्ययन (Study of various abnormalities)
5. मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अध्ययन (Study of mental hygiene)

(1) बालक की वृद्धि एवं विकास का क्रम गर्भाधान प्रक्रिया से आरम्भ हो जाता है तथा मृत्युपर्यन्त चलता है किन्तु इस विकास प्रक्रिया में समय-समय पर आवश्यक परिवर्तन होते रहते हैं तथा यह परिवर्तन अपनी एक निर्धारित दर से एक निर्धारित सीमा तक पहुँचते हैं, जिसे परिपक्वता कहते हैं। प्रत्येक परिवर्तन एक नयी अवस्था की सूचना देता है तथा परिपक्वता तक पहुँचकर नयी अवस्था में प्रवेश करता है। वृद्धि विकास की अवस्थाएँ निम्नलिखित हैं—

(I) जन्म पूर्व विकास की अवस्था (Prenatal Stage)

(II) जन्म पश्चात् विकास की अवस्था (Post natal Stage)

जन्म पूर्व विकास की अवस्था प्रमुख तीन अवस्थाओं से होकर गुजरती है—

(i) डिम्बावस्था (Zygotic Stage)

(ii) भ्रूणावस्था (Embryonic Stage)

(iii) शिशुकाल (Foetus Stage)

जन्म पश्चात् विकास की अवस्था की प्रमुख अवस्थाएँ निम्नवत् हैं—

(i) नवजात काल (Infancy)

Scanned with CamScanner

(ii) शिशुकाल तथा शैशव अवस्था (Babyhood)

(iii) बाल्यकाल (Childhood)

(iv) किशोरावस्था (Adolescence)

(v) प्रौढ़ावस्था (Adulthood)

(vi) वृद्धावस्था (Oid age)

इन अवस्थाओं का विस्तार से हम आगे अध्ययन करेंगे–

(2) विकास के विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन (Study of Various Areas of Development)

विकास की अवस्थाओं से तात्पर्य है परिवर्तन ग्रहण करने वाला तथा विकास के क्षेत्र से तात्पर्य है परिवर्तन का प्रकार जो अवस्था ग्रहण करेगी। विकास के प्रमुख क्षेत्र (Areas) निम्नलिखित हैं–

(i) शारीरिक विकास (Physical development)

(ii) मानसिक विकास (Mental development)

(iii) संवेगात्मक विकास (Emotional development)

(iv) सामाजिक विकास (Social development)

(v) गत्यात्मक विकास (Motor development)

(vi) नैतिक विकास (Moral development)

(vii) भाषा का विकास (Language development)

(3) विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का अध्ययन (Study of various factors effecting development)

बाल विकास का अध्ययन क्षेत्र विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का भी विस्तृत अध्ययन कराता है। इन कारकों को हम विस्तार से आगे पढ़ेंगे यहाँ हम केवल बिन्दु विचार दे रहे हैं–

(i) वंशानुक्रम (Heredity)

(ii) वातावरण (Environment)

(iii) शिक्षण एवं प्रशिक्षण (Learning and Training)

(iv) अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ (Endocrine glands)

(v) पोषण (Nutrition)

(4) विभिन्न असामान्यताओं का अध्ययन (Study of Various Abnormalities)

बाल विकास के अन्तर्गत सामान्य विकासात्मक क्रियाओं का ही नहीं अपितु असामान्य विकास, वृद्धि एवं व्यवहारों का अध्ययन भी किया जाता है। असामान्यता चाहे शारीरिक अंग अवयवों की क्रियाशीलता की हो अथवा मानसिक अयोग्यता अथवा असामान्यता भाषा सम्बन्धी दोष, उच्चारण के दोष हो अथवा सभी का विस्तृत अध्ययन बाल विकास क्षेत्र के अन्तर्गत होता है।

(5) मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अध्ययन (Study of Mental Hygiene)

बाल विकास मानसिक असामान्यताओं के कारणों की जाँच उसके उपचार तक का भी अध्ययन कराता है। मानसिक अयोग्यता के प्रकारों की जानकारी तथा स्वस्थ सामाजिक सम्बन्धों को पनपने के लिए भी बाल विकास के पास प्रावधान है। मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तों का अध्ययन बाल विकास का महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास का तुलनात्मक अध्ययन
(Comparative Study of Child Psychology & Child Development)

बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास दोनों ही बाल अध्ययन के क्षेत्र हैं। बाल अध्ययन के महत्व को स्वीकार करने के बाद बालकों को मनोवैज्ञानिक स्तर पर समझा जाने लगा। उनकी शारीरिक, मानसिक योग्यताओं, स्वभाव एवं रूचियों, संवेगात्मक प्रवृत्तियों, अभिवृत्तियों एवं मनोवृत्तियों में व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर उनका अध्ययन किया जाने लगा तथा अध्ययन के इस क्षेत्र को नाम दिया गया–बाल मनोविज्ञान। जेम्स

Scanned with CamScanner

ड्रेवर ने बाल मनोविज्ञान को इन शब्दों में परिभाषित किया, "बाल मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म से परिपक्वता तक विकसित हो रहे मानव का अध्ययन किया जाता है।"

20वीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों तक अधिकांश मनोवैज्ञानिकों ने कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में ही कार्य किया जैसे खेल, भाषा, संवेग, नवजात शिशुओं की शारीरिक-मानसिक क्रियायें आदि। धीरे-धीरे बाल मनोविज्ञान की लोकप्रियता बढ़ने लगी और मनोवैज्ञानिकों की रूचि भी इस विषय में बढ़ी। धीरे-धीरे अध्ययनों से ज्ञात होने लगा कि विभिन्न स्तरों पर केवल बाल व्यवहार के विभिन्न आयामों का अध्ययन ही पर्याप्त नहीं है। इन अध्ययनों से विभिन्न अवस्थाओं में बालकों की आयु वृद्धि के साथ-साथ उनमें होने वाले परिवर्तनों एवं उनके कारकों का ज्ञान नहीं हो पाता है। अतः पर्याप्त ज्ञान प्राप्ति के लिए बालकों के अध्ययन दो शाखा में बँट गये—एक को बाल मनोविज्ञान एवं दूसरी को बाल विकास कहा जाने लगा।

ई. बी. हरलॉक ने अपनी पुस्तक बाल विकास में मनोविज्ञान एवं बाल विकास में प्रमुख चार अन्तर स्पष्ट किये हैं—

(1) बाल मनोविज्ञान विकास के परिणाम अथवा उत्पादन पर बल देता है जबकि बाल विकास, विकास की प्रक्रिया पर अधिक महत्व अथवा बल देता है। उदाहरण के लिए, भाषा का विकास अध्ययन दोनों करते हैं। बाल मनोविज्ञान में बालक जो कहता है अथवा उसके शब्द ज्ञान पर अधिक दबाव दिया जाता है जबकि बाल विकास में बालक कैसे बोलना सीखता है तथा उसके बोलना सीखने की प्रक्रिया की क्या विशेषताएँ हैं और कौन-सी स्थितियाँ इस पद्धति में विभिन्नता लाती हैं इस पर प्रकाश डालता है।

(2) बाल विकास बाल मनोविज्ञान की तुलना में वातावरण के महत्व पर अधिक प्रकाश डालता है। इसका अर्थ यह नहीं कि बाल मनोविज्ञान वातावरण एवं अनुभव के महत्व को नकारता है परन्तु तुलनात्मक रूप से यह वातावरण एवं अनुभव के प्रभाव को कम महत्व देता है।

(3) बाल मनोविज्ञान का एक ही प्रमुख उद्देश्य है—बाल व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन करना। बाल विकास के 6 प्रमुख उद्देश्य हैं—

आयु वृद्धि के परिणामस्वरूप बालक के शारीरिक, व्यवहार, रूचि तथा लक्ष्यों में एक अवस्था से दूसरी अवस्था के परिवर्तनों का अध्ययन करना। परिवर्तनों के समय एवं स्वरूप का अध्ययन करना, परिवर्तनों के कारणों का अध्ययन करना, इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप व्यवहार पर पड़ने वाला प्रभाव का अध्ययन करना। यह ज्ञात करना कि क्या इन परिवर्तनों की भविष्यवाणी की जा सकती है तथा यह परिवर्तन व्यक्तिगत है अथवा सार्वभौमिक।

(4) बाल मनोविज्ञान आरम्भिक स्कूल अवस्था, पूर्ण आरम्भिक अवस्था के साथ-साथ जन्म के समय तथा यौवन उन्मुख अवस्था के क्षेत्र तक विस्तृत है जबकि गर्भावस्था में वातावरण के प्रभाव को देखते हुए बाल विकास गर्भाधान के समय से ही बालक का अध्ययन आरम्भ कर देता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बाल विकास का क्षेत्र बाल मनोविज्ञान से अधिक विस्तृत है। यद्यपि दोनों ही क्षेत्र एक दूसरे से अनेकों महत्वपूर्ण तथ्यों में काफी समीपी सम्बन्ध रखते हैं यद्यपि इनके अध्ययन के स्वरूप, क्षेत्र व लक्ष्यों में अन्तर दृष्टिगत होता है।

Scanned with CamScanner